22140095

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A: LITERATURE – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A : LITTÉRATURE – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A: LITERATURA – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Friday 9 May 2014 (morning)
Vendredi 9 mai 2014 (matin)
Viernes 9 de mayo de 2014 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a guided literary analysis on one passage only. In your answer you must address both of the guiding questions provided.
- The maximum mark for this examination paper is *[20 marks]*.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez une analyse littéraire dirigée d’un seul des passages. Les deux questions d’orientation fournies doivent être traitées dans votre réponse.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d’examen est *[20 points]*.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un análisis literario guiado sobre un solo pasaje. Debe abordar las dos preguntas de orientación en su respuesta.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es *[20 puntos]*.

© International Baccalaureate Organization 2014

https://xtremepape.rs/

*नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए। अपने उत्तर में आप दिये गए दोनों सहायक प्रश्नों का समावेश करें।*

1.

जून उन्नीस सौ सैतालीस के बदन झुलसाते दिन। असमंजस और आतंक भरा माहौल। पश्चिमी पंजाब के सनखतरा नाम के कस्बे में हसन नाम का पेंटर अपनी रोजगारदायक कला साधना में मशगूल है। वह चित्र बड़े जानदार बनाता है। हसन के पास बहुत काम नहीं है। वह या तो रामलीला की स्टेज पर लगने वाले पर्दे और विंग तैयार करता है या फिर ऑर्डर पर हिन्दू देवी देवताओं और अवतारी विभूतियों के बड़े बड़े चित्र बनाता है। उसके हाथ की छुअन मात्र से ही कैन्वास जीवंत हो उठता है। पाकिस्तान बननेवाला है, अतः देश और प्रदेश की फिज़ाओं में धार्मिक उन्माद बढ़ गया है। उनके पहनावे और चाल-ढाल में तो परिवर्तन हुआ ही है, चेहरों के भावों में भी कट्टरता और कठोरता झलकने लगी है। हसन के अपने समाज के लोग ही उसे बहुदेवपूजक और काफिर कहने लगे हैं। धरती के बटवारे के साथ-साथ दिलों को भी अलग अलग खेमों में बांटने की कवायद शुरू है। पर तस्वीरें बनाना तो हसन का पेशा है। अगर वह यह काम न करे तो भूखा नहीं मरेगा? ईमानदारी से काम करते हुए पेट पालना तो उसकी नज़रों में सबसे बड़ी इबादत है। एक दिन शराफत अली नाम का उसका एक पुराना सहपाठी, जो किसी दूर के रिश्ते मे उसका साला लगता है, उसके पास आया। उस समय चाय का चलन लगभग न के बराबर था पर हसन कैन्वास के सामने की जानेवाली हर बैठक से पहले इसकी तलब महसूस करता था। शराफत अली को भी उसने एक प्याला थमाया और कहा-"ज़रा पीकर बताना, कैसी लगी मेरे हाथ की चाय।" उसके ज़रा हिचकिचाने पर वह थोड़ा मुस्कुराया और बोला- नहीं-नहीं शराफत मियां इसमे हिचकनेवाली कोई बात नहीं। मजहब और मोरेलिटी से इसका कोई ताल्लुक नहीं। जितनी जल्दी चाय का चलन फैला है मियां इतनी जल्दी तो बुद्ध धर्म भी नहीं फैला दुनिया में। शराफत अली ने प्याला लिया चुस्कियां लेकर पीने लगा और हसन के रंगों, कूचियों और तैयार की गई तस्वीरों का मुआइना भी करता रहा। खुदा का नाम भी लेते हो मियां या रंगरेज की तरह परदे ही रंगते रहते हो सारा दिन। हसन को लगता है जैसे किसी ने पत्थर मार दिया हो। खैर कोई बात नहीं। हसन दोस्ताना लहजे में कहता है, "आपने इबादत की बात पूछी हैं न? तो मियां खूबसूरत चीज बनाने और उसे तकमिल तक पहुँचाने की कोशिश भी तो एक इबादत ही है। मैं नमाज़ अदा करता हूँ।" "सिजदा तो इन तस्वीरों के सामने ही होता होगा न?" "एक गरीब आर्टिस्ट हूँ शराफत भाई। जब से नसरीन गुजरी है यह कोठडी ही मेरा घर है और यही मेरी आर्ट गैलरी। घरवाली ही नहीं रही तो घर क्या। यही स्टोव पर दो रोटियाँ सेक लेता हूँ और यहीं बोरी बिछाकर सो जाता हूँ। इससे आप खुद समझ सकते हैं कि मेरी नमाज़ कैसी होती है।" "आपकी सब बातें काफिरों जैसी हैं। मियां, जरा संभलकर रहना। पाकिस्तान बननेवाला है।" शराफत अली के ऐसा कहने पर हसन सोचता है, "यह हो क्या गया है इसके दिमाग को? जवाबतलवी करने पर उतर आया है। माना की मजहब का पाबंद होना एक अच्छी बात है पर मजहबी उन्माद तो कोई अच्छी बात नहीं।" और वह तैश में आकर कहता है- "पाकिस्तान ही तो बननेवाला है, कोई आसमान तो नहीं गिरनेवाला है शराफत भाई। नये मुल्क में कोई कानून भी तो होगा। ऐसा तो नहीं होगा कि हर आदमी मजहब का अपना ही मतलब निकाल ले। आप ही फतवा दें और आप ही सज़ा देनेवाले मुंशिफ बन जाएँ। इंसान की नेक नियति और अपने समाज की इंसाफपसंदी से मेरा भरोसा उठा नहीं है अभी। अच्छा शराफत मियां, अगर बुरा न माने तो एक बात कहूँ?" "कहने को अब रहा ही क्या है?" तो ठीक है मियां, करो अपने मन की मर्जी। पाकिस्तान बनने की तारीख निकट आ रही है और मजहबी जुनून बढ़ने लगा है। गरम दल वाले जुनूनी सूफीयाना महफिलों में शामिल होनेवालो और पीरों-फकीरों की दरगाहों की जियारत करनेवालों पर भी टूट पड़ते है।

https://xtremepape.rs/

हर तरफ अराजकता है। और एक दिन हुआ बिलकुल वही जिसकी कि उसे आशंका थी। हसन बड़े धीरज से सरदार कि बाते सुनता है और यह सोचते हुए कि उसने जब कोई गलत काम किया ही नहीं तो उसे डरने कि क्या जरूरत है। वह थोड़ी हिम्मत जुटाकर बोलता है "जनाब गफ़ूर साहब, पेट पालने के लिए अपनाए गए शरीफाना पेशे में ऐसी क्या मजहब कि खिलाफत है।" "यह फलसफा तो रखो अपने पास ही। पाकिस्तान बन लेने दो, फिर देखेंगे कैसे चलता है तुम्हारा यह फन।" और पाकिस्तान बन गया। घर फूँक दिये जाते है। सड़के और गलियाँ लाशों से पट जाती है। कुछ उन्मादी हसन के घर को भी आग लगा देते है। वह एक फ्रेम लगा पोर्ट्रेट अखबार में पैक कर बगल मे दबा भाग खड़ा होता है किसी शरणस्थल की तलाश में। गिरता-पड़ता, लड़खड़ाता कभी इधर जाता और कभी उधर। और इसी बीच एक तीखा भाला उसकी पीठ से घुसकर छाती में निकाल आता है। "या अल्लाह" ...कह कर उसके दम तोड़ने से हमलावरों को पता चलता है की वह मुसलमान है। हसन की मौत की खबर जंगल में आग की तरह फैल जाती है। बहुत बुरा हुआ। अब्दुल गफ़ूर के पूछने पर वह कहता है एक सच्चा मुसलमान मारा गया। हाँ बहुत बुरा हुआ। "एक इंसान मारा गया।" हाजी साहिब की जबान से ये शब्द बरबस फुट पड़ते हैं।

सत्यपाल शर्मा, एक इंसान मारा गया, विपाशा, जनवरी-फ़रवरी (2005)

(a) कहानी में प्रस्तुत कथानायक की मन:स्थिति और परिस्थिति और घटनाक्रम के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

(b) लेखक द्वारा प्रयुक्त भाषा, शैली और इसके समग्र प्रभाव के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

https://xtremepape.rs/

2.

पिंजरा

पिंजरे का दरवाजा खुला है
पिंजरे में बैठी चिड़िया
आकाश में उड़ जाने के लिए स्वतंत्र है।
पर चिड़िया
पिंजरे से बाहर नहीं निकलती और आकाश में नहीं उड़ती।
वह जानती है
स्वतन्त्रता का स्वप्न रंग बिखेरता
आकाश खतरों से
भरा पड़ा है
तीर हैं, बहेलिये हैं, शिकारी पक्षी हैं
जहाँ उसकी जान की जोखिम और खतरा है
इसलिए वह चुपचाप
पिंजरे का खुला दरवाजा बंद करने का इशारा
और आग्रह करती है
ताकि उसका जीवन सुरक्षित बना रहे।
चिड़िया गुलामी मे रहने जीने
और सुरक्षित होने का विश्वास जीती है
पिंजरे ने उसका स्वतंत्र जीने का साहस और शक्ति छीन ली।
चिड़िया को भरोसा है
पिंजरे से ज्यादा सुरक्षित जगह
उसके लिए और कोई नहीं।

राधेलाल बिजधानवे, कथा क्रम, अप्रैल- जून (2012)

(a) पिंजरे में बैठी चिड़िया के बारे में आप क्या सोचते हैं? यह किसका प्रतीक है? कवि कहाँ तक पिंजरे में बैठी चिड़िया के माध्यम से अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है?

(b) कवि की भाषा, शैली और प्रस्तुतीकरण का कविता के संदेश एवं केन्द्रीय विषयवस्तु की प्रस्तुति मे समग्र प्रभाव की विवेचना कीजिए।

https://xtremepape.rs/